# ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का बदलते स्वरूप का प्रभाव– एक अध्ययन

– डॉ. अरूणा कुसुमाकर

**प्रस्तावना–**

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आज भी पारम्परिरक कृषि अधिकांशतः देशीय आदानों पर निर्भर करती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश को विकास की आवश्यकता अनुभव हुई तो योजनाबद्ध विकास मॉडल में कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता दी गई। जिला मुख्यालय से लेकर गावों तक आधुनिक कृषि तकनीकि के प्रचार–प्रसार के लिए कृषि विभाग ने अपने विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आधुनिक कृषि तकनीकी के प्रयोग पर बल दिया।

वर्तमाान समय में बढती हुई जनसंख्या का प्रभाव कृषि उत्पादन पर भी पडा है फलस्वरूप कृषि से जो उत्पादन होता है वह सभी के लिए पर्याप्त नहीं होता है। कृषि योग्य भूमि सीमित है, ऐसी दशा में दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में विपुल उत्पादन हेतु कृषि भी आधुनिक उन्नत तकनीकी का प्रयोग का संयोजन देखने को मिलता है। वर्तमान में आधुनिक तकनीकी के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप के प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

**अध्ययन के उद्देश्य :–**

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का आर्थिक विकास में योगदान।

**शोध विधि :–**

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक संमकों पर आधारित है। अतः प्राथमिक संमकों का संकलन ग्रामीण कृषकों से अनुसूची, प्रत्यक्ष चर्चा एवं अवलोकन के माध्यम से किया गया है। इस हेतु निदर्शन पद्धति से खरगोन एवं बडवानी जिले के 50–50 कृषकों का चयन कर समंकों का संकलन कर विश्लेषणात्मक पद्धति से उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

**विश्लेषण :–**

**ग्रामीण क्षेत्र में उत्पादित मुख्य फसलों की स्थिति –**

| फसलें | उत्पादन (प्रतिशत) | उत्पादन नहीं | योग |
|---|---|---|---|
| कपास | 100 (100) | – | 100 |
| सोयाबीन | 100 (100) | – | 100 |
| मूंगफली | 100 (100) | – | 100 |
| ज्वार | 100 (100) | – | 100 |
| बाजरा | 100 (100) | – | 100 |
| मक्का | 100 (100) | – | 100 |
| गन्ना | 110 (10) | 90 | 100 |
| पपीता | 15 (15) | 85 | 100 |
| अदरक | 30 (30) | 70 | 100 |
| केला | 35 (35) | 65 | 100 |
| गेहूँ | 100 (100) | – | 100 |

**स्रोत्र – सर्वेक्षण से प्राप्त संमकों के आधार पर –**

**ग्रामीण क्षेत्र में उत्पादित मुख्य फसलों की स्थिति –**

ग्रामीण कृषकों द्वारा उत्पादित मुख्य फसलों के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वेक्षित ग्रामीण कृषक मुख्य फसलों के यप में कपास, सोयाबीन, मूंगफली, ज्वार, मक्का, बाजरा एवं गेहूँ अनिवार्य रूप से उत्पन्न करते हैं जबकि गन्ना, पपीता, अदरक व केले का उत्पादन कम मात्रा में होता है।

**आधुनिक उपकरणों के खरीदने हेतु वितीय व्यवस्था के सात्र की स्थिति –**

| वित्त व्यवस्था | कृषकों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| किराए के उपकरण | 12 | 12 |
| स्वयं के | 58 | 58 |
| ऋण लेकर | 27 | 27 |
| अन्य | 03 | 03 |
| | 100 | 100 |

**स्रोत – सर्वेक्षण से प्राप्त संमकों के आधार पर**

अध्ययन से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि ग्रामीण कृषकों द्वारा टेक्टर, थ्रेशर, कल्टीवेटर, विद्युत पम्प एवं छिडकाव पम्प का उपयोग अधिकांशतः किया जा रहा है किन्तु मेज सेलर, रोटो वेटर, ब्रंड फार्मर एवं हार्वेस्टर का उपयोग ग्रामीण कृषकों द्वारा नहीं किया जा रहा है।

ग्रामीण कृषकों के आधुनिक उपकरणों के स्वामित्व के संबंध में प्राप्त तथ्य के आधार पर स्पष्ट है कि 58 प्रतिशत कृषकों ने इन आधुनिक उपकरणों को स्वयं खरीद कर उपयोग करते हैं 27 प्रतिशत ऋण लेकर जबकि 12 प्रतिशत कृषक इन्हें किरए पर लेकर उपयोग करते हैं।

**आधुनिक उपकरणों के उपयोग के बाद कृषकों का लाभ की स्थिति –**

| लाभ | कृषकों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| उत्पादन में वृद्धि हुई | 65 | 65 |
| कृषि भूमि का विस्तार हुआ | 10 | 10 |
| समय की बचत हुई | 75 | 75 |
| श्रम की बचत | 70 | 70 |

**स्रोत – सर्वेक्षण से प्राप्त संमकों के आधार पर**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित कृषकों में सर्वाधिक 75 प्रतिशत कृषकों को समय की बचत हुई है, 70 प्रतिशत श्रम की बचत हुई है तथा 65 प्रतिशत ग्रामीण कृषकों के उत्पादन में वृद्धि हुई है। वास्तव में आधुनिक उपकरणों के उपयोग के बाद कृषकों को लाभ प्राप्त हुआ है तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

**आधुनिक तकनीकी प्रयोग के बाद भूमि की उर्वरा शक्ति पर प्रभाव –**

| उर्वरा शक्ति पर प्रभाव | कृषकों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| उर्वरा शक्ति बढ गई | 94 | 94 |
| कोई परिवर्तन नहीं आया | 04 | 04 |
| अन्य | 02 | 02 |
| योग | 100 | 100 |

**स्रोत – सर्वेक्षण योग से प्राप्त समंकों के आधार पर**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि आधुनिक तकनीकी के प्रयोग के प्रभाव से 94 प्रतिशत कृषकों की कृषि भूमि की उर्वरा क्षमता में वृद्धि हो गई केवल 04 प्रतिशत कृषकों की कृषि भूमि की उर्वरा शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पडा है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का आर्थिक विकास में योगदान ज्ञात करने के लिए सर्वेक्षित ग्रामीण कृषकों से प्राप्त तथ्यों से ज्ञात हुआ कि आधुनिक तकनीकी को अपनाने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पडा है। कपास, सोयाबीन, मूंगफली, मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, चना अरहर, उडद एवं चवला के उत्पादन में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही आधुनिक तकनीकी के उपयोग से कृषकों की कृषि भूमि की उर्वरा क्षमता में वृद्धि हुई है।

**आधुनिक तकनीकी के प्रयोग से आर्थिक स्थिति –**

| आर्थिक स्थिति की दशा | कृषकों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|
| आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर | 92 | 92 |
| में सुधार | 08 | 08 |
| योग | 100 | 100 |

**स्रोत – सर्वेक्षण से प्राप्त संमकों के आधर पर**

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण कृषकों के कृषि में आधुनिक तकनीकी अपनाने के बाद उनकी आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर के सम्बन्ध में प्राप्त तथ्यों से स्पष्ट है कि 92 प्रतिशत कृषकों की आर्थिक स्थिति एवं जीवन–स्तर में सुधार हुआ है केवल 8 प्रतिशत कृषकों की आर्थिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। इसका कारण ज्ञात करने पर ज्ञात हुआ कि कृषक आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण आधुनिक उपकरण किराए पर लेकर प्रयोग करते है जिससे उन्हें अधिक भुगतान किराए के ऐिल करना पडता है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का आर्थिक विकास में योगदान के अध्ययन में पाया कि ग्रामीण कृषकों द्वारा कृषि में नवीन बीज, उर्वरकों एवं रासायनिक का भरपूर उपयोग करने के कारण कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है। नवीन तकनीक के उपयोग के बाद कृषकों की भूमि कीक उर्वरक क्षमता में वृद्धि हुई है जिससे उत्पादकता बढी है। वास्तव में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का बदलता स्वरूप आर्थिक विकास में अपना विशेष योगदान प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि यद्यपि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का स्वरूप परम्परागत से आधुनिक होता जा रहा है। ग्रामीण कृषक तेजी से आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर नवीन तकनीकी के प्रयोग की ओर अग्रसर हो रहे हैं किन्तु दूसरी ओर कृषकों की अशिक्षा एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण आधुनिक तकनीक के प्रयोग में कठिनाई आती है। अतः इस ओर ध्यान देना आवश्यक है ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का बदलता स्वरूप देश में नई क्रांति लाने में सक्षम होगा।

**संदर्भ सूची**

सर्वेक्षण से प्राप्त एवं संमक।

– प्राचार्य, शासकीय संस्कृत महाविद्यालय
रामबाग, इन्दौर